JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला साहित्यकारों का बाल साहित्य मै योगदान

Dr. Anita Patidar
HOD Of Art Department
Shree Umiya Kanya Mahavidyalaya Rau Indore

सारांश –

सृष्टि में नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।अतः नारी का अपमान ईश्वर का अपमान है। किसी भी देश की सर्वांगीण उन्नति में महिलाओं की अहम भूमिका है। आज देश का कोई भी ऐसा क्षेत्र या पद नहीं है जहां महिलाओं की पहुंच न हुई हो। स्त्री को जहां अवसर मिला उसने उसका पूरा लाभ उठाया और अपनी क्षमता को प्रदर्शित भी किया । घर के कामकाज में दिन-रात जुटे रहने के बावजूद भी उसने अनेक चुनौतियों का सामना किया। आज की महिलाएं चारदीवारी में घुट -घुटकर जीने की अपेक्षा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने का प्रयास कर रही है। नारी त्याग, बलिदान, समर्पण, स्नेह आदि से एकनिष्ठ एवं कर्तव्यनिष्ठ बनी रही है। मां एक ऐसा सागर है, जिसकी गहराई में मानवीय गुण और व्यवहार समाहित है। धर्म साहित्य, कला और संस्कृति की ऐसी कोई विदा नहीं है, जहां मां अपनी पहचान गुण याद जीवन व्याख्या के रूप में मौजूद नहीं है। मां तपती है , सुलगती है, भीगती है, ठिठुरती है, कवच बन अपने बच्चों के लिए हमेशा तत्पर रहती है। उनके सुखद भविष्य के लिए वह पूजा करती है तथा सुख समृद्धि की कामना करती है। इसलिए कहा जाता है कि मां के सम्मान छाया नहीं, मां के सम्मान सेवाभावी दूसरा नहीं वह तो गंगा की निर्मल धारा की तरह सतत् अपने बच्चों में बहने वाली कृपावंत जननी है उसके अंतर्मन में ममता का सागर हिलोरे लेता है। बच्चे की पहली गुरु उसकी मां और घर ही पाठशाला होती है। भारतीय संस्कृति में महान माताओं के तप-बल की गाथाएं सर्वोपरि है । गार्गी मैत्रेयी, मदालसा, सीता और अनुसुया ने मातृ महिमा के महान आदर्शों को ही समाज में स्थापित नहीं किया बल्कि लव कुश और अभिमन्यु को शक्तिशाली योद्धा बनाया, शिवाजी को वीर पुरुष बनाया राजा, हरिश्चंद्र और गांधीजी को सत्य निष्ठा व ईमानदारी की प्रेरणा दी। स्वतंत्रता आंदोलन में भारत कोकिला, सरोजिनी नायडू, रानी लक्ष्मीबाई और चेन्नमा जैसी स्त्रियों ने युवा पीढ़ी को त्याग और बलिदान का मार्ग बताया।

बाल साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा –

बच्चों की रुचि, जिज्ञासा, इच्छा–आकांक्षा, राग–द्वेष, भावना–कल्पना को ध्यान में रखकर लिखा गया साहित्य ही बालसाहित्य है। बालक मानव जाति का अंकुर होता है, उसे ईष्वरीय चमत्कार भी कहते है, बालक की मानसिक शक्ति, उसकी जागरुकता और जिज्ञासा भाव अद्‌भुत होते है। बालमन इतना चंचल होता है कि उसे ठीक प्रकार से समझ पाना बहुत कठिन हो जाता है।

वास्तव में बच्चों का अपना संसार होता है। उनका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। उनके लिए संस्कृति, साहित्य तथा समाज नया होता है। बड़ों की अपेक्षा बच्चे, उन सब वस्तुओं के लिए धनी होते है, उनके पास प्रत्येक वस्तु को जानने–पहचानने की कल्पना शक्ति जाग्रत होती है कि वे बड़ों की अपेक्षा जल्दी समझ लेते है। बच्चे खुले वातावरण में जीवन जीना चाहते है, वे उछलते कूदते है, गाते है और नाचते है, बैर और मैत्री करते है। बच्चे अपने लघु कलेवर में विराट मानवत्व समेटे होते है। स्वभाव से कोमल इन बालकों को छल–प्रपंच, दंभ और भेद छू तक नहीं सकता। बच्चों के बचपन में जो संस्कार पड़ते है, वे हमें उनके आगे जीवन में देखने को मिलता है। आदर्श बालक, आदर्ष समाज की नींव का कार्य करता है। संस्कार परिषुद्धि में बालसाहित्य का सर्वाधिक सहयोग होता है। बालसाहित्य ही बच्चों को संसार के क्रियाकलापों से परिचित करवाता है। इसलिए कहा जाता है कि, सौ उपदेष से अच्छा होता है एक आचरण।

षकुन्तला वर्मा के अनुसार –

''बालसाहित्य वह साहित्य है, जो बच्चों के मानसिक स्तर को दृष्टि में रखकर उनके धरातल तक उतरकर उनके मनोभावों तथा रुचियों को ध्यान में रखकर, मनोरंजक षैली में ज्ञानवर्धक रुप से लिखा गया हो। यही कुछ विषेष तत्व है, जो बालसाहित्य को प्रौढ़ साहित्य से अलग करते है। हमारे देष में प्राचीन काल से ही हिन्दी बालसाहित्य लिखा जाता था।

पंचतंत्र, कथासरित्सागर, हितोपदेष, नीतिकथाएँ, लोककथाओं का अथाह भण्डार इस बात का साक्षी है। पंचतंत्र ऐसी अनमोल, अनूठी कृति है।''[1]

डॉ. ज्योति स्वरुप के अनुसार –

''बालक किसी राष्ट्र की सर्वोच्च सम्पत्ति है, क्योंकि वह भावी राष्ट्र निर्माता है। यदि उसका प्रारंभ से उचित मार्गदर्षन हो गया तो समाज का कल्याण होना निष्चित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् हमारे देष में बालकों को उचित मार्ग पर लगने के लिए लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है। बालक को मार्गदर्षन के अनेक उपायों में से साहित्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि साहित्य के द्वारा अनायास ही बाल मनोवृत्तियों का परिष्कार किया जा सकता है।''[2]

अर्थात इन्होंने स्पष्ट किया है कि बालक स्वभावतः कोमल होता है। बच्चों का भोला–भाला मन जिज्ञासाओं और उत्सुकताओं से भरा होता है। कठोर व कठिन ज्ञान उनकी नन्हीं सी बुद्धि के ग्रहण करने योग्य नहीं होता है। गहन से गहन बात भी यदि सरल, सहज व मनोरंजक ढंग से विविध साहित्यिक विधाओं के माध्यम से कही जाय, तो वह उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इसलिए हम इन्हें बोझिल साहित्य की अपेक्षा सरल साहित्य दे, जिससे इनका विकास हो सकें। बच्चों के बाल्यावस्था में जो संस्कार मड़ते है, उन्हीं का प्रतिफल हमें उनके आगे के जीवन में दृष्टिगोचर होता है। संस्कारों के निर्माण में बालसाहित्य का महत्वपूर्ण योगदान हैं।

बाल मनोविज्ञान का स्वरूप –

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। उसका लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार है। मनोविज्ञान का इससे कही अधिक प्रमुख वह पहलू है जो आत्मविकास, चरित्र–निर्माण, मानसिक आरोग्य, इन्द्रियेत्तर प्रत्यक्ष आदि से संबंधित हैं। मनोविज्ञान बच्चों के द्वारा किये गये व्यवहार का विज्ञान हैं। बालसाहित्य लेखन में बाल–मनोविज्ञान का योगदान ठीक इस प्रकार है जैसे भाषा की रचना में क्रिया का एवं शरीर की रचना में रीढ़ की हड्डी का। मनोविज्ञान का लक्ष्य विभिन्न दिशाओं में बच्चों की समस्याओं का समाधान करना हैं।

बालक क्या सोचता है, उसकी अनुभूतियाँ क्या है, यह जान पाना बहुत कठिन कामहै। बालमनों विज्ञान को जाने बिना यह संभव नहीं है, तथा यह कार्य वस्तुतः 'परकाया प्रवेश' जैसा है। बालसाहित्य की किसी भी विधा में लिखने के लिए यह निहायत जरूरी है कि रचनाकर बाल–मनोविज्ञान का कुशल पारखी हो। बालमन की बारीकियों को समझकर ही अच्छे बालसाहित्य की रचना कर सकते है। बालक का मनोविज्ञान उसकी अवस्था, पारिवारिक स्थिति, भोगौलिक स्थिति, सामाजिक परिवेश इत्यादि बिन्दुओं पर आधारित होता हैं। अतः बालमन में जीवन्त समर्पण किए बिना बाल साहित्य की सफल रचना संभव ही नहीं है।

प्रो. कुसुम मिश्र (डोभाल) के अनुसार–''बच्चे जितने सरल और सीधे होते है, उन्हें समझना उतना ही कठिन होता है। इसलिए बाल मनोविज्ञान समझना उतना ही आवश्यक है, जितना एक स्वस्थ समाज के लिए एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण।''[3] बालमन बड़ा कोमल और सरल होता है बिल्कुल फूलों जैसा। अतः बालकों के लिए लेखन करते समय बालमनोविज्ञान को समझना बहुत जरूरी होता हैं। बच्चे अपने साथ प्रेम का व्यवहार चाहते है और जहाँ से प्रेम मिलता है, वही से बटोर लेते है। उनकी भोली–भाली बातें, सपनों की दुनिया, परियों का मेला और आजकल मोबाइल मेट्रो अथा आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। इस दिशा में सुप्रसिद्ध कवयित्री, कथाकार 'अंजु दुआ जैमिनी' की प्रस्तुत संग्रह की बाल कविताएँ बालमनोविज्ञान का जिंदा सबूत है। उन्होंने बच्चों के मन को भलि–भाँति जाना या समझा है तथा इन कविताओं के माध्यम से बच्चों को अच्छी बातें सीखायी हैं।

मालती बसंत बाल मनोविज्ञान की ज्ञाता है। वे बालमन की भावना, संवेदना, अनुभूति, कल्पना सब कुछ उनकी रचनाओं में सहज व सशक्त ढंग से मुखरित हुआ हैं। छोटे बच्चों के मन में संसार के प्रति सहज कौतुहल का भाव होता है और यह भाव मनोरंजन के द्वारा ही संभव है। 'माँ–की कहानी' संग्रह में बालमनोविज्ञान को समझाते हुए कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। इन छोटी–छोटी सात कहानियों में बच्चों के मनोभावों को जाग्रत किया गया हैं। इनके विषय– माँ भी तो इंसान है, तलाश, माँ सिर्फ माँ, माँ का महत्व, दर्द की दवा, बुढ़ापे का सहारा, अनुभव आदि हैं। माँ सिर्फ माँ, कहानी में सुमि सौतेली माँ को सहन नहीं करती और बीमार हो जाती है। बीमारी में सौतेली माँ उसकी अपनी माँ की तरह देखभाल करती है जिससे सुमि का हृदय परिवर्तन हो जाता है और उसे वह नई अपनी माँ मान लेती है–''उनकी आँखों से अपने प्रति मुझे वात्सल्य ही दिखायी देता। पता नहीं क्यों अब उनका साँवला रंग भी मुझे अच्छा लगने लगा था। कहीं इनमें मेरी माँ की आत्मा तो नहीं प्रवेश कर गयी ?''[4] ''मुझे महसूस हो रहा था माँ सिर्फ माँ होती है''[5] इन बाल कहानियों का मुख्य उद्देश्य है बच्चों को मनोरंजन के साथ ही नैतिक शिक्षा व ज्ञानवर्धन करना है। ये कहानियाँ बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए उनकी स्वाभाविक मनोवृत्तियों को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उन्हें नई दिशा और सही राह दिखाने का प्रयास भी करती है।

आज का युग विज्ञान का युग है बच्चा सभी के बारे में जानना समझना चाहता है। जो विज्ञान के द्वारा निर्मला सिंह ने बच्चों को समझाने का प्रयास किया है। क्योंकि बच्चों का मन कोरी स्लेट के समान होता है जिस पर माँ लिखना–पढ़ना सिखाती है। नीलम राकेश की कहानियाँ भी बच्चों को वैज्ञानिक रहस्यों से परिचित कराती है जैसे अद्‌भुत हीरा, जादुई अक्षरों का कमाल तथा हिच हिच–हिचकी आदि हैं। हर कहानी के पीछे एक उद्‌देश्य निहित है इसके साथ ही मनोरंजन भी होता है।

'यह हीरा नहीं है, प्रिज्म है।''
प्रिज्म.....? प्रिज्म क्या होता है?'' पिंकी ने पूछा

''प्रिज्म पारदर्शी काँच का एक तिकोना टुकड़ा होता है। यदि यह काँच का टुकड़ा है तो फिर यह हीरे की तरह चमक क्यों रहा था?

आज से बहुत समय पहले एक महान वैज्ञानिक हुए थे सर आइज़क न्यूटन। सर न्यूटन ने सबसे पहले यह सिद्ध किया था कि सूर्य का जो प्रकाश हमें सफेद दिखाई देता है वह वास्तव में सात रंगों से मिलकर बना होता है।'[6] इसी प्रिज्म की सहायता से सर न्यूटन ने दुनिया के सामने अपना वह सिद्धांत सिद्ध कर दिखाया था।''[7]

नीलम राकेश की ''यह कैसा चक्कर'' पुस्तक गाँव वालों को वैज्ञानिक रहस्यों से परिचित कराती है। इस कहानी में विज्ञान युगीन नयी चुनौती को स्वीकार कर बच्चों के द्वारा विज्ञान रूपी प्रयोग को सभी के सामने प्रस्तुत किया है। इस कहानी के पीछे एक विशेष उद्‌देश्य निहित है। ''रसायन विज्ञान का सिद्धांत है एल्यूमिनियम जब मरक्यूरिक क्लोरइड के साथ क्रिया करता है तो वह एल्यूमिनियम ऑक्साइड बनाता है एक एल्यूमीनियम ऑक्साइड ही हमें भभूत जैसा दिखाई देता है।''[8] इस कहानी में शंकर एक गाँव का लड़का जो शहर में पढ़ाई करने गया था और जब गाँव आता है तो उसके साथ शर्मा जी भी आते है जो उस सिद्ध बाबा का भांडा फोड़ते है और गाँव वालों के सामने विज्ञान के आविष्कारों का प्रयोग कर उनका अंधविश्वास दूर करते है कि आज विज्ञान के द्वारा कोई भी कार्य आसानी से किया जाता है। जैसे–''शुद्ध ग्लिसरीन को घी के स्थान पर लेकर मन्त्र पढ़ने का नाटक करते हुए हवन कुण्ड के चारों ओर डालते हुए बीच में दो चम्मच डाल देते है और हाथ से हवा करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मंत्रोच्चारण का नाटक चलता रहता है। ''शंकर के ग्लिसरीन डालते ही हवन कुण्ड से अग्नि उठने लगी।''[9] अंत में गाँव वाले शर्मा जी के कहने पर पढ़ाई भी करते है और गाँव में अपने श्रमदान से कुआँ भी खोद लेते है उस गाँव की तरक्की हो जाती है इसलिए कभी कोई नया चमत्कार दिखाए तो उसके पीछे छिपे रहस्य को समझने की कोशिश करना चाहिए।

डॉ. सरस्वती बाली ने बच्चों को अंतरिक्ष विज्ञान की पूरी–पूरी जानकारी दी गयी हैं। क्योंकि आज बच्चों का हमेशा यह प्रश्न होता है कि अंतरिक्ष पर क्या है? वहाँ कैसा है, वहाँ क्या–क्या होता है ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर इस कहानी के माध्यम से दिया जा सकता हैं। इसमें अंतरिक्ष विज्ञान की सभी जानकारियाँ दी गयी है। 'टिम–टिम तारे' कहानी में चेतन को सौर मण्डल की जानकारी दी गयी है कि तारे और सूर्य कैसे बने है तथा यह चमकते कैसे है। ''सात ऋषियों का सप्तर्षिमंडल, लालरंग का चमकता हुआ मंगल, नीले रंग का शनि, पीले रंग का एक बड़ा सा ग्रह, बृहस्पति इत्यादि सारा सौर मण्डल भी दिखाया गया था परन्तु सूर्य कही नहीं था क्योंकि यह रात का समय दिखाई दे रहा था।''[10] हमारे प्राचीन ऋषि मुनि इसे ब्रह्माण्ड कहते थे। आजकल विज्ञान की भाषा में इसे 'यूनिवर्स' कहा जाता है। इस आकाश के ओर छोर का आदि अंत का पता वैज्ञानिक नहीं लगा सके है।''[11]

डॉ. सरस्वती बाली की इन कहानियों के द्वारा बच्चों को पूरे ब्रह्माण्ड एवं अंतरिक्ष की यात्रा करवायी गयी हैं। इसमें बच्चों के हर एक छोटे से छोटे प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। इनसे बच्चों का मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन भी हुआ है।

बच्चों के विकास, मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं समसामयिक जीवन से परिचित कराने में आज के बालसाहित्य की विभिन्न विधाओं का उल्लेखनीय योगदान है। ये विधाएं बालक की संवेदनाओं को आंदोलित कर अप्रत्यक्ष रूप में उसकी सोच और संस्कारों पर प्रभाव डालती है। मानवीय मूल्य, नीति और संस्कारों को बच्चा इन विभिन्न विधाओं के माध्यम से जिस सरलता व सहजता से ग्रहण करता है, वह डाँट–फटकार कर या उपदेश द्वारा नहीं किया जाता है। कहानी, कविता, नाटक, जीवनी, यात्रा विवरण व बाल उपन्यास जैसी अनेक विधाओं के द्वारा बालक के कोमल हृदय पर गहरी छाप पड़ती हैं जो उसे बुरा बनने से बचाता है। इन विधाओं से बालमन में दुनिया को देखने तथा रिश्ते–नातों को समझने के नजरिए का निर्माण होता हैं। इस क्षेत्र में अनेक कवयित्रियों का उल्लेखनीय योगदान है, क्योंकि वे मानती है कि बच्चे को जो भी संस्कार देना है,

वह छोटे में ही दे देना चाहिए। जहाँ समाज में आज चारों ओर घुटन, विद्वेष, घृणा का वातावरण व्याप्त है, वहाँ मात्र बालसाहित्य का ही एक मात्र सहारा लेकर बच्चा सुसंस्कारवान बन सकता है।
महिला बाल साहित्यकारों की रचनाओं से बच्चों में दया, उदारता सहिष्णुता जैसे उदात्त मानवीय गुणों की प्रेरणा लेकर एक नई दिशा मिलती हैं। प्रत्येक विधा की अपनी प्रकृति होती हैं, जो भावों की अभिव्यक्ति में सहयोग करती है। ये रचना वर्षों पुरानी होते हुए भी अपना नयापन लिये हुए बालकोपयोगी होती है।

श्रीमती विमला कौशिक की पुस्तक 'लाला लोरी' में छोटे–छोटे गीतों से बच्चों को हंसाने, बहलाने, फुसलाने आदि का मनोहारी चित्रण हैं। संसार में जिस कोने में माँ और बालक है वहाँ गीत व लोरी किसी न किसी रूप में मिल ही जाते हैं। जैसे बालक के लिए दूर आकाश में चाँद आकर्षण एवं कौतूहल का विषय बने हुए हैं। उसके साथ 'मामा' जुड़ने से तो और भी आत्मीयता बढ़ जाती है। जैसे–

''चंदा मामा दूर के, दही पकौड़े पूर के।
आप खाए थाली में, भैया को दे प्याली में।
प्याली गई टूट, भैया गया रूठ।
नई थाली लाएँगे, चंदा को मनाएँगे।''[12]

यह लोरी आज भी इतनी ही लोक प्रिय है जितनी वर्षो पूर्व थी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी बच्चों के लिए प्रेरक बालगीत लिखे हैं। इन्होंने बालकों के मनोविज्ञान को भली भांति समझा था। इसीलिए बाल–मनोवृत्तियों का चित्रण इनके गीतों में खूब मिलते है। बच्चों का जिद करना, मचलना, खेलना, बहाने बनाना और भी कई तरह की शैतानियां करना गीतों में बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त हुआ हैं। इसीलिए बालसाहित्य को कुछ ऐसी अमूल्य रचनाएँ मिली है, उसके लिए वह सदा ऋणी रहेगा। 'सभा का खेल' यह गीत बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया है।

''सभा सभा का खेल आज हम, खेलेंगे जीजी आओ।
मैं गांधी जी, छोटे नेहरू, तुम सरोजनी बन जाओ।
छोड़ो सभी विदेशी चीजें, लो देशी सुई लागा।
इतने में आए काका जी, नेहरू सीट छोड़कर भागा।''[13]

बाल–कल्पना की उड़ान कितनी स्वाभाविक और सरल होती है। जीवनानुभूतियों व बालमनोविज्ञान को पिरोती ये पंक्तियाँ बेजोड़ है। इस गीत के माध्यम से कवयित्री ने महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी के जीवन की आदर्शमयी झांकी प्रस्तुत की हैं जिससे बच्चें उनके जीवन की प्रेरणा ले सके और सदा सही रास्ते पर चले।

डॉ. पद्मासिंह की 'फूलों को खिलना है' में बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये छोटी–छोटी कविताएं कोमल अनुभूतियों के विविधरंगी स्वरूप में फूलों के समान बच्चों का वर्णन किया गया हैं। प्रकृति की गोद में फलने–फूलने का भरपूर अवसर पाकर ही हमारे फूल या बच्चे इस संसार को मानवता की सुगंध से महाकाऐंगे। तभी तो ईश्वर की पवित्र सृष्टि इस धरती को दिव्य प्रकाश से भर देगी। प्रकृति के विभिन्न रूपों से बच्चों को परिचित कराया हैं जिससे बालकों को सबल शक्ति और उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर किया गया है।

'घर आँगन में महक रहे है, फुलवारी के फूल।
कांटों में रहकर हँसते हैं, सुन्दर सुन्दर फूल।[14]

'बच्चों ऐसे काम करो' 'धरती का सम्मान करो, दुश्मन को भी प्यार करो।
बैरभाव कायरता छोड़ो, दीन दुखी को प्यार करो''[15]

'मेरी माँ' 'मानवता के फूल खिलाती, खेतों में खुशियाँ बिखराती।
घर आँगन में दीप जलाती, माँ जग में उजियारा है।[16]

'फूल सभी के मन भाते' वन उपवन को महकाते, फूल सभी के मन भाते।
कहीं गुलाब चमेली चम्पा, खिले मोगरा रजनीगंधा।[17]

ये कविताएँ बड़े ही मनोरंजक ढंग से लिखी गई है जिसमें छोटे बच्चों का वर्णन फूलों के समान किया है। जैसे घर आँगन में खिलने वाले फूलों का अर्थ है। संसार के ये छोटे बच्चे जो कल का भविष्य है जो संसार को अपने कार्यों से महकायेगें।

डॉ. मधु भारतीय की गीतमयी रचना धर्मिता का ही प्रमाण है कि उन्होंने हजारों गीतों का संग्रह किया हैं जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित भी हुए है। इन बाल गीतों में समुचित तत्वों का ज्ञान है। बाल मन में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने मे 'गुड़ियों का ब्याह'' यह पहला प्रयास है। वस्तुतः शिशुगीतों में भावुकता एवं रोचकता की आवश्यकता होती है ये गुण इन शिशु गीतों में पर्याप्त है। डॉ. मधु भारतीय ने सीधी, सरल, सुबोध व मुहावरेदार भाषा शैली का प्रयोग किया हैं। पशु–पक्षी जीव–जन्तु, पेड़–पौधे, फल–फूल, चंदा तारे, बादल आदि सभी इनके गीतों के पात्र हैं।

अंको का गीत– खाना केवल एक, दो आम, स्वयं करो तुम अपने काम,
गिनते जाओं दो, तीन, चार, हर प्राणी को करना प्यार।
उड़ती चिड़ियाँ पाँच, छः, सात, कभी न बोलो कड़वी बात।
आठ, नौ पेड़ लगाना तुम, श्रम से जी ना चुराना तुम।
दो हाथों में अँगुलियाँ दस, पढ़ते समय न करना आलस।''[18]

बालक का व्यक्तित्व बड़ा कल्पनाशील होता है। बच्चों के मानसिक विकास और उनकी मनोवृत्तियों को उचित मोड़ देने में ये छोटे–छोटे गीत बड़े ही सहायक सिद्ध होंगे। ये बालगीत प्रकृति का चित्रण करते हुए बच्चों के हृदय में प्रकृति प्रेम भर देते हैं।

कहानी बालसाहित्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा हैं। जो बच्चों को सबसे ज्यादा भाती है, बल्कि वे कहानी के पात्र के साथ तादात्म्य स्थापित करके नए–नए अनुभव भी प्राप्त करते है। बालमन की कुशल चितेरी महिला बाल साहित्यकारों ने इस बात को समझते हुए बच्चों को विविध विषयों की अनेक कहानियाँ दी हैं। इन कहानियों का संबंध बालक के अपने जीवन से है। जिन वस्तुओं के सम्पर्क में आता है अथवा जिन विज्ञान के उपकरणों का प्रयोग करता है, इन सबको आधार देकर उन्होंने कहानियाँ लिखी है। बच्चों के मनोरंजन के लिए तेनालीराम, शेखचिल्ली, अकबर–बीरबल विनोद की कहानियां सदियों से प्रसिद्ध हैं। आज का बच्चा सिर्फ कहानी सुनता या पढ़ता ही नहीं है, बल्कि अपनी वैज्ञानिक दृष्टि से कहानी के परिवेश, पात्र, घटनाक्रम वगैरह को परखता हैं। तारे परी लोक है, चन्द्रमा पर देवता रहते हैं जैसी बातें अब बच्चों को नहीं सुहाती हैं क्योंकि वे सब कुछ जानते हैं। कहानी–विधा बालसाहित्य की रीढ़ है। यह सशक्त, रोचक और मनोरंजन विधा हैं। आज भी बच्चे रोज नई–नई कहानियाँ सुनने को तत्पर रहते है। बच्चों के लिए कहानी एक आकर्षण की वस्तु है। कहानी के लिए बच्चे खाना–पीना सब कुछ छोड़ देते है। कहानियाँ हजारों मील की यात्रा करके संसार के एक कोने से दूसरे कोने में, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सुनायी जाती हैं। वास्तव में उस समय कहानी कहने का एक अलग ही ढंग था। बच्चे आज भी कहानियाँ सुनना पसंद करते है क्योंकि यह उनकी मनौवैज्ञानिक रूचि का परिणाम है।

डॉ. बानो सरताज ने कहानी प्रचुर मात्रा में लिखी है इन्होंने कहानियों के माध्यम से बच्चों की कोमल भावनाओं को बहुत सरल तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। जिससे बच्चे सत्मार्ग की ओर प्रेरित हो सकें। इन कहानियों में बच्चों को कुछ न कुछ अच्छी सीख जरूर दी गई है। सच्चाई की कहानी संग्रह में आज भी सच्चाई जिन्दा है, का बहुत ही अच्छा उदाहरण दिया गया है। जैसे –
किसान : जो अभी नासमझ है, कुछ वर्ष बाद उन्हें भी आपकी जरूरत होगी। तब आप उन्हें मिलेगी नहीं तो वे क्या करेंगे।''[19]
सच्चाई : पर वे है; कौन जिन्हें मेरी जरूरत है?''[20]
किसान : आज के बच्चे; कल के नागरिक। जब सच्चाई उन्हें कहीं दिखाई न देगी तो वे किस आधार पर कहेंगे कि दुनिया में सच्चाई का अस्तित्व है?''[21]

इस कहानी के माध्यम से बच्चों को सच्चाई का पाठ पढ़ाया गया हैं। इनकी कहानियाँ नाटकीय तरीके से बच्चों को दी गई है। इस संग्रह में 4 छोटी–छोटी कहानियाँ है जिससे बच्चों को भाषा का चमत्कार, सच्ची बात जैसी कहानियों के माध्यम से सच का साथ देना, बुराई को पीछे छोड़ना आदि की प्रेरणा दी गई हैं।

डॉ. शकुन्तला कालरा का 'मोती–जोती, कहानी संग्रह आधुनिक भावबोध पर आधारित है। इसमें लेखिका ने जानवरों के प्रति स्नेह बताया है, जिसमें नगर का एक सेठ, 'शिवपूजन' जो बड़ा ही दयालू हैं उसके बेटे भी बंटी–शंटी अपने पिता की ही राह पर चलते है वह भी जानवरों से बड़ा प्यार करते है। इस प्रकार कुतिया के बच्चों को अपनी रचना का माध्यम बनाया है जिसमें उनका नाम मोती–जाती है और किस प्रकार कुतिया के बच्चे अपने मालिक के प्रति ईमानदारी बताते है और मालिक का भी अपने जानवरों से कितना प्रेम है यह इस कहानी के माध्यम से बताया गया हैं। ''सभी मोती–जोती की बहादुरी और वफादारी से बड़े खुश थे। दूसरे दिन शिवपूजन भी बंटी–शंटी के साथ शिमला घूमकर वापस आ गए। पड़ोसियों ने उन्हें सारी घटना सुना दी, बंटी–शंटी को देखकर मोती–जोती जोर–जोर से कुई कुई करने लगे बंटी–शंटी ने उन्हें खूब

प्यार किया। उन्हें सहलाते हुए कहा, ''आओं दोस्तो, तुमने तो कमाल कर दिया आज तुम्हें दुगुना दूध मिलेगा। कल तुम्हें चोरों के साथ कुश्ती करनी पड़ी थी। बड़ी ताकत लगी होगी।''[22]

अपना घर कहानी संग्रह एक ऐसे लड़के की कहानी है जिसमें उसकी शैतानियों को उजागर किया है और उसके बाद उसे पश्चाताप भी होता है। लेखिका ने इस कहानी में बताया है कि शैल नाम का एक लड़का, जो बहुत ही शैतान है अपने माता–पिता की न तो बात सुनता और ना ही पढ़ाई करता है। साथ अपनी छोटी बहन को मारता रहता है। उसे किसी की भी परवाह नहीं है, या फिर वह लापरवाह है। जब उसकी इन हरकतों से माँ गिर जाती है, तो उसे अस्पताल ले जाना पड़ता है, लेकिन फिर भी उसे कोई पश्चाताप नहीं होता। लेकिन जब उसके पापा एक थप्पड़ मार देते है तो वह गुस्सा होकर घर छोड़ देता है। बाहर रहकर वहाँ के वातावरण में भूखा–प्यासा रहता है तब उसे मालूम पड़ता है कि वह कितना गलत था और फिर उसे अपनी गलती का अहसास होता है। ''पापा मुझसे गलती हो गई। अब मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। माँ कैसी हैं मुझे घर की बड़ी याद आ रही है।'' यह कहते हुए फोन पर ही शैल बड़े जोर–जोर से रोने लगा।[23] 'अपना घर' कहानी में घर तथा घर में मिलने वाली सुविधाओं का महत्व छोड़ने पर ही पता चलता है। यह कहानी लेखिका ने बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत की। डॉ. कालरा बाल मनोविज्ञान की चितेरी कहानीकार है।

इसी प्रकार श्रीमती इन्दु पाराशर जी ने ''बच्चों देश तुम्हारा'' पुस्तक में देशभक्ति की 36 कविताएं है जो बच्चों को देश, संस्कृति, आजादी एवं शहीदों का परिचय करवाती हैं। इन्होंने बाल स्वभाव, बाल मनोवृत्ति एवं बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए सतर्कता के साथ बाल काव्य के विषय का चयन किया है। प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय भावना, नीतितत्व एंव ज्ञानतत्व इनकी रचनाओं में विशेष रूप से मिलता हैं। इनकी कविताओं के विषय है–हम सब एक है, बापू, 26 जनवरी, हिन्द के इतिहास का स्वर्णिम दिवस–15 अगस्त, सरदार भगतसिंह, नवनिहाल देश के, देश के लिए उठो, क्रांति दूत सुभाष, नौजवान देश के, जय जवान, नेहरू चाचा वापस आओं, आतंक का कहर, महाकाल का तांडव, क्रांति के सौ वर्ष, मदर टेरेसा, चंद्रशेखर आजाद, बच्चों देश तुम्हारा आदि का सुन्दर चित्रण हैं।

''बच्चों देश तुम्हारा'' नई शती है, खड़ी प्रगति के,द्वार यहाँ पर खोले।
देख–देख, भारत की ताकत, सबकी हिम्मत डोले।
पुर्नप्रतिस्थापन का देखें, समय आ गया है अब।
भारती की गरिमा महिमा फिर, सबके सर, चढ़ बोले।''[24]

इन्दु पाराशर ने देश भक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत बाल कविताओं का सृजन कर बच्चों के हृदय में राष्ट्रप्रेम, का बीजारोपण किया हैं। इन बाल कविताओं के द्वारा –अपने देश को, अपने देशभक्तों के कार्यो को आजादी का मोल जिन्होंने अपने प्राणों से चुकाकर हमारे शहीदों ने हासिल की और हमको उपहार रूप में दी हैं। बच्चों के विकास एवं निर्माण में इन कविताओं का महत्वपूर्ण योगदान है। ये कविताएं विविध ज्ञान के साथ सही रास्ता भी दिखाती है।

निष्कर्ष –

महिला बाल साहित्यकारों का समग्र बाल साहित्य बच्चों की हर गतिविधियों को और उनमें व्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों को लेकर खड़ा हुआ हैA इन्होंने बाल साहित्य के साथ -साथ अन्य विधाओं में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी है अपने जीवन के अनुभव को कागज पर उतार देने का कर्म रहा है A बच्चों की दुनिया बड़ी ही न्यारी होती है जिसमें उनकी सहज हंसी, चुलबुलापन, शैतानियां, जिज्ञासाए ,इच्छाएं ,रूठना मनाना ,हट करना, रोते-रोते खिलखिला कर हंस देना, सवाल पर सवाल करते हुए कभी ना थकना आदि बातें होती है इन सब का ध्यान रखकर ही बाल साहित्य की रचना की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि साहित्य बड़ों के लिए लिखा जाए या बाल साहित्य बच्चों के लिए उसमें महिला साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। महिला बाल साहित्यकारों की बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल जीवनी बाल नाटक आदि में बच्चों का व्यक्तित्व विकास व मार्गदर्शन छिपा रहता है, क्योंकि मां की ममता में बच्चे का हित निहित रहता है। मातृप्रेम बच्चे का सबसे बड़ा सहारा होता है, महिला लेखक बालक बालक के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर लिखती है क्योंकि उनमें मातृ हृदय होता है और वह बाल मनोविज्ञान की सूक्ष्मता से निरंतर अध्ययन करती है।

संदर्भ सूची

1. शकुन्तला वर्मा का लेख, भारतीय बालसाहित्य के विविध आयाम, पृ.सं. 33
2. बालसाहित्य समीक्षा संदर्भ, पृ.सं. 38
3. कश्क, डॉ. विनोद कुमार तनेजा, नवम्बर 2008, पृ सं. 1

4,5. माँ की कहानी, मालती बसंत, पृ.सं. 27
6. हिम्मत ने जीती बाजी, नीलम राकेश पृ.सं. 24
7. वही. पृ. सं. 25
8. यह कैसा चक्कर, नीलम राकेश, पृ. 35
9. वही, पृ.सं. 45
10. टिम–टिम तारे, डॉ. सरस्वती बाली पृ. सं. 30
11. वहीं. पृ. सं. 33
12. लाल लोरी, श्रीमती विमला कौशिक; पृ. सं. 24
13. हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन ,पृ. सं. 214
14. फूलवारी के फूल, डॉ. पद्मासिंह, पृ.सं. 9
15. वही, पृ. सं. 14
16. वही, पृ. सं. 15
17. वही, पृ. सं. 28
18. गीतों की फुलवारी, डॉ. मधु भातरीय, पृ.सं. 19
19,20,21. सच्चाई की कहानी, डॉ. बानों सरताज, पृ. सं. 26
22. सच्चा हीरा, पृ. सं. 51
23. मोती–जोती, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृ. सं. 10
24. बच्चों देश तुम्हारा, इन्दु पाराशर, पृ. सं. 61